□□□□ □□□□□□□□□□

जनसत्ता 30 अप्रैल, 2014 : नरेंद्र मोदी कॉरपोरेट और राजनीति के मेल की उपज हैं। पूंजी की निर्मम ढंग से सेवा के सिवाय

इस मेल का न कोई धर्म है न संप्रदाय। हर बीतते दिन के साथ यह बात साफ होती जा रही है। मोदी की अब तक की राजनीति का यही सार-तत्त्व है। भाजपा का पूरा प्रचार, इस पर खर्च किया जा रहा अरबों रुपया, उसके पीछे खड़े भारत के सभी बड़े-बड़े इजारेदार घराने इसी बात के प्रमाण हैं। मोदित्व अर्थात मुसोलिनी का फासीवाद अर्थात कॉरपोरेटवाद।

हिटलर का एक मूल मंत्र था कि सत्ता में आने के लिए समाज के हर तबके से उसकी हर समस्या के समाधान का वादा करो, क्योंकि विजयी से बाद में कभी कोई जवाब मांगने की हिम्मत नहीं करता। वह पार्लियामेंट में गया था बहस करने के लिए नहीं, बहस को ही खत्म कर देने के लिए; संसदीय प्रणाली का सम्मान करने के लिए नहीं, संसद को ही नष्ट कर देने के लिए। उसने युद्ध शुरू करने के पहले अपने सहयोगियों से कहा था-युद्ध के प्रारंभ के लिए मैं एक प्रचारमूलक तर्क तैयार करूंगा। यह कभी मत सोचो कि वह सच है या नहीं, विजेता से बाद में कोई नहीं पूछेगा कि उसने सच कहा था या नहीं। युद्ध छेड़ने और चलाने में 'सहीपन' का कोई मतलब नहीं है, सिर्फ जीत का मतलब होता है।

बाहुबलियों द्वारा चुनाव लूटने की सचाई को हम पिछले चालीस सालों से देश के विभिन्न हिस्सों में देखते आ रहे हैं। इस बार धनबलियों ने पूरे देश का चुनाव लूटने की योजना तैयार की है। मोदी की चुनावी सभाओं में कैमरों की मदद से भीड़ को कई गुना बड़ा कर तो दिखाया ही जाता है, भीड़ का भारी शोर भी पहले से डब किया हुआ होता है। धनबलियों द्वारा लोगों के मतों पर डाका ही फासीवादी कॉरपोरेटवाद है और मोदी उसी के प्रतिनिधि हैं। यह भारत के जनतंत्र को कॉरपोरेट घरानों की खुली चुनौती है।

'इकोनॉमिस्ट' पत्रिका के एक ताजा अंक के मुखपृष्ठ पर मोदी की तस्वीर है और यह सवाल किया गया है कि 'क्या नरेंद्र मोदी को कोई रोक सकता है?' आगे, अंक में भारत के चुनाव पर दो पन्नों के लेख में इसी सवाल के उत्तर की तलाश की गई है। इस लेख में कांग्रेस सरकार की विफलताओं और उसके शासन में पैठे राजनीतिक भ्रष्टाचार का विश्लेषण किया गया है। मोदी के राजनीतिक इतिहास, आर एस एस से उनके संबंध, उनके अंदर भरा हुआ मुसलिम-विद्वेष और गुजरात के दंगों के समय उनकी भूमिका का भी उल्लेख है। साफ कहा गया है कि उन दंगों में मोदी के खिलाफ सबूत इसलिए नहीं मिल पाए हैं क्योंकि सबूतों को बाकायदा नष्ट कर दिया गया है।

इन सभी स्थितियों का आकलन करते हुए 'इकोनॉमिस्ट' की साफ राय है कि मोदी भारत के समाज में एक भारी विभाजनकारी तत्त्व साबित होंगे। इसीलिए पत्रिका का कहना है कि गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनने के आसार न दिखने के बावजूद 'हम भारत के लोगों से अपेक्षाकृत कम बुरे विकल्प की सिफारिश करेंगे।'

'इकोनॉमस्टि' का यह भी कहना है क मोदी में आधुनकिता, ईमानदारी या न्यायप्रयिता जैसा कुछ भी नहीं है□ भारत को इससे बेहतर मलिना चाहि□□ इस लेख में 'इकोनॉमस्टि' ने राजग के घटकों से यह अपील भी की है क उन्हें मोदी के बजाय कसी दूसरे को अपना प्रधानमंत्री चुनना चाहि□□ 'इकोनॉमस्टि' का कहना है क मोदी प्रधानमंत्री बन सकते हैं, लेकनि इसका अर्थ यह नहीं है क वे इसके लायक है□

हम भी उन लोगों में नहीं हैं जो कांग्रेस और भाजपा को □क ही तराजू पर तौलते हैं□ कांग्रेस का नव-उदारवाद देश की अनेक बीमारयिों की ज□ में होने के बावजूद वह अब भी जन-दबावों के सामने खुली है□ इसके वपिरीत, मोदी के नेतृत्व की भाजपा नव-उदारवादी नीतयिों को पूरी नष्ठिुरता और नर्दियता के साथ लागू करने वाली पार्टी है□ उसने गुजरात में इसका परचिय दयिा है□ अब तो भारतीय जनता पार्टी अतीत की कोई वस्मिृत हो चुकी पार्टी है□ जो सामने है, वह तो मोदी-पार्टी है, जसिका लक्ष्य मोदी सरकार का गठन करना है□ मोदी के अलावा इसमें दूसरा कोई नेता नहीं है□

वषि-बुझे भाषणों के साथ अब मोदी अपने असली रंग में आ ग□ हैं□ गुजरात का झूठ क्या खुला, मोदीजी का वकिास का ढकोसला भी बंद हो गया! पहले मोदी की वकिास की रट से कुछ लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ था□ कुछ को लगा क आगे की राजनीत अब सर्फि वकिास पर होगी□ लेकनि यह भ्रम इतना अल्पजीवी साबति होगा, यह कम लोगों ने ही सोचा था!

भाजपा-वरिोधी दलों को पाकस्तिान का □जेंट घोषति करने के बाद अब मोदी ने राष्ट्र के संवधिान की आधारशलिा पर आक्रमण करना शुरू कर दयिा है□ जम्मू के अपने भाषण में उन्होंने धर्मनरिपेक्षता के वरिुद्ध फरि उसी धर्मयुद्ध की हुंकार भरी, जो आर□स□स अपने जन्म के समय से ही करता रहा है□ अगर इसी प्रकार चलता रहा तो जल्द ही अपनी वीरता का बखान करते हु□ वे 2002 पर अपने गर्व-बोध की घोषणा करेंगे□ सीधी भाषा में वे उसे गुजरात के वभिन्नि इलाकों में मुसलमि-बस्तयिों के रूप में मौजूद सभी छोटे-छोटे पाकस्तिानों को उजा□ने के महान 'देशभक्तपूिर्ण' काम कहेंगे□ उनकी जुबान पर जल्द ही फरि राम जन्मभूम,ि काशी, मथुरा की बातें भी आने लगेंगी□ आर□स□स के मूलभूत सद्धिांत पर वे हदिुओं के सैन्यीकरण की, अल्पसंख्यकों को अराष्ट्रीय मानने और उनके साथ तदनुरूप आचरण करने की बात भी करने लगें तो इस पर अचरज नहीं होना चाहि□□

नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने से हम जनि खतरों की बात करते हैं, वे अभी से सामने आने लगे हैं□ वे अपने असली मंतव्यों को जतिना ही छपिाने की कोशशि करते हैं, उतने ही प्रबल रूप में उनका असली चेहरा सामने आ जाता है□ आर□स□स की वचिारधारा में जो संघ का समर्थक नहीं है, वह हदिू नहीं है, पाकस्तिान का □जेंट है□ नरेंद्र मोदी उसी कट्टरता को दोहरा रहे हैं□ इसके पीछे उनका आत्म-वश्विास बोल रहा है या कसी प्रकार की घबराहट है, यह वचिार का दूसरा वषिय है□ कसी भी वजह से क्यों न हो, आज उन्होंने इलेक्ट्रॉनकि माध्यमों को रुपयों और मालकिों की धौंस के बल पर इतनी बुरी तरह से कस कर रख दयिा है क आडवाणी तक इस माध्यम से गायब हैं□ प्रेस और माध्यमों की स्वतंत्रता पर यह हमला आपातकाल के दनिों की यादों को ताजा कर देता है□ मोदी हमारी अभव्यिक्त िकी स्वतंत्रता पर □क ब□ा खतरा हैं□

आर□स□स का कोई संवधिान नहीं था□ उसे सरदार पटेल ने जबर्दस्ती उस समय गोलवलकर पर दबाव डाल कर तैयार करवाया था, जब गांधीजी की हत्या के बाद गोलवलकर जेल में थे□ संवधिान न होने का आर□स□स वालों का तर्क होता था क हदिू संयुक्त परविार का भी क्या कोई संवधिान होता है! यह तो □क अलखिति, सदयिों की परंपराओं से स्वत: नर्मिति संवधिान है□ परविार के प्रमुख कर्ता की इच्छा सर्वोपर िहोती है, उसे कोई चुनौती नहीं दी जा सकती□ हास्यास्पद ढंग से वे संघ के अवतरण को ईश्वरीय काम मानते हु□ गीता के श्लोक को भी उद्धृत करते थे: 'यदा यदा ह िधर्मस्य...'

भाजपा ने भी अपना मुखयिा चुन लयिा है□ उसकी इच्छा और कथन ही घोषणापत्र है, क्योंक िउसे कभी चुनौती नहीं दी जा सकती है□ ऊपर से, मोदी तो साक्षात ईश्वर भी है- हर हर मोदी! महादेव का नया अवतार! फरि कैसा घोषणापत्र, कैसा संवधिान!

इमाम बुखारी से सोनिया गांधी की यह अपील कि सेक्युलर वोटों में विभाजन नहीं होना चाहि□, आगामी चुनाव के सारे समीकरणों को बदल देने वाला □क 'मास्टर स्ट्रोक' साबित हो सकता है□ इससे कोई फर्क नहीं प□ता कि बुखारी के नियंत्रण में कोई वोट है या नहीं□ फर्क प□ता है सोनिया गांधी की इस अपील से□ यह मतदाताओं के ब□ हिस्से के मन के तारों को छे□ सकता है□ भाजपा ने नरेंद्र मोदी को सामने लाकर सभी सांप्रदायिक तत्त्वों को इकट्ठा करने का काम शुरू किया था, इसका माकूल जवाब सभी धर्मनिरपेक्ष ताकतों की □क्ता ही हो सकता है□ सोनिया गांधी ने यही आह्वान किया है□ जिनको रामदेव जैसे धार्मिक नेताओं का उपयोग करने में जरा भी हिचक नहीं होती, वे इमाम बुखारी से सोनिया गांधी के मिलने और उनसे अपील करने पर इतना भ□क क्यों ग□ ?

धर्मगुरुओं को लेकर हमेशा से राजनीति करने वाले आर□स□स और भाजपा के नेता जब इमाम बुखारी से सोनिया गांधी के मिलने और उनसे निवेदन करने पर भ□क्ते हैं तो उनका मिथ्याचार देखते बनता है□

सन 2002 में गुजरात में मारे ग□ हजारों बेकसूर आज भारत के लोगों से इंसाफ मांग रहे हैं□ हमेशा ब□-च□ कर अपनी डींग हांकने वाले नरेंद्र मोदी 2002 का जिक्र आते ही □कदम मौन हो जाते हैं□ मोदी की यह सायास चुप्पी क्या कहती है? यह इस बात का संकेत है कि खुदा न खास्ता इस चुनाव में अगर उनको कुछ अधिक सीटें मिल गर्इं तो वे यह खुल कर दावा करेंगे कि भारत के लोगों ने 2002 के जनसंहार पर मोहर लगा दी है□

यह कभी नहीं भूलना चाहि□ कि आगामी चुनाव में भारत में फासीवाद के खिलाफ□क फैसला कुन ल□ाई होगी□ □बीपी न्यूज वाले भाजपा के नेताओं से पूछ रहे थे कि मोदी की कथित लहर रुक क्यों गई है? चुनाव परिणाम बता□ंगे कि लहर तो कोरी मीडिया की माया थी, आंख खुलते ही इसे खत्म होना था□ भाजपा का दुर्भाग्य यह है कि वह खुद इस माया का शिकार हो गई□ अभी से उसके समर्थन में ज्वार के बजाय भाटे का दौर शुरू हो गया है□ यह बात सिर्फ नेताओं के आने-जाने की नहीं है, आम समर्थकों के मोहभंग की है □

मोदी और भाजपा में ब□ रही स्पर्श-कातरता (□कप्रकार का छुई-मुईपन)- कहीं किसी भी कोने से उनके विरोध का कोई स्वर सुनाई न देने पा□, इसके ल□ साम-दाम-दंड-भेद के सभी उपायों के प्रयोग के प्रति अति-तत्परता- दरअसल जनतंत्र के बुनियादी उसूलों के खिलाफ है□ लेकिन, यही आगामी चुनाव में उनकी पराजय का भी संकेत है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के ल□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के ल□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta